Date: / /

बाल अध्ययन

(CHILD STUDY)

बालक गतिशील प्राणी हैं। विशेष प्रत्येक दिन नित नये परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन शारीरिक अभिवृद्धि तथा परिपक्वता के रूप में प्रकट होते हैं। प्राणी में अनवरत परिवर्तन ही विकास है। परिवर्तन की प्रक्रिया के कारक शून्य से प्रारम्भ होने वाला जीव क्रमशः शिशु बालक, किशोर प्रौढ़ और वृद्धि के रूप में विकसीत होता है।

बाल अध्ययन नया विषय नहीं हैं। अति प्राचीन काल से ही शिशु के समुचित विकास के लिए बालक अध्ययन को महत्व दिया जाता हैं। हमारे शास्त्रों और धार्मिक ग्रन्थों में भी इस बाल को महत्व देकर कहा गया हैं।

बाल अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि →

(HISTORICAL BACKGROUND OF CHHLD STUDY)

बाल विकास की दृष्टि से बाल अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय हैं। किन्तु यदि हम बाल अध्ययन के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं। तो ज्ञात होता है कि लगभग सोलहवीं शताब्दी तक लोग बाल अध्ययन की आवश्यकता को अधिक महत्व नहीं देते थे। और बालको को लघु प्रौढ़ मानकर बाल मन तथा प्रौढ़ मन में कोई खास अन्तर नहीं

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

देते थे और बालको को लघु प्रौढ़ मानकर बाल मन तथा प्रौढ़ मन में कोई खास अन्तर नही समझते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे उन्नीसवी शताब्दी में लोगों की रुचि बाल विकास के अध्ययन की ओर बढ़ने लगी। फलस्वरूप टेन (Taine) ने 1876 में इन्फेट डेवलेमेंट नामक पुस्तक लिखी जिससे बालको के भाषा विकास पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद डार्विन ने अपनी पुस्तक बायोग्राफीकल स्केच ऑफ एन इनफेंट ~~Infant development~~ प्रकाशित की 1881 में जर्मन वैज्ञानिक विल्हेम प्रेयर (Withelm Preyer) ने 'द माइन्ड ऑफ चाइल्ड' जीवनी प्रकाशित की यह जीवन उन्होने अपनी पुत्र की जन्म से तीन वर्ष तक के विकास क्रम का अध्ययन करके लिखी थी और बताया कि पशुओ तथा मानव शिशुओ की सहज क्रियाओ के विकास की गति प्राय: समान ही होती है।

1894 में अमेरिका के ब्रान्सन अल्कॉट (Bronson Alcott) ने अपनी ~~पुस्तक~~ दो पुत्रियो 'अन्ना' तथा 'लुइसा' की जीवनी लिखी 1893 में शिन के अनुसार—

शीन ने भी एक जीवनी प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने अपनी एक वर्षीय

Date: / /

भतीजी के विकास का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया शिशु की यह जीवनी बहुत महत्वपूर्ण मानी गयी।

1- बाल अध्ययन के लिये अधिक से अधिक वैज्ञानिक तथा वस्तुनिष्ठ विधियो का प्रयोग → बाल अध्ययन के लिए बीसवीं शताब्दी में ऐसी वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ विधियों का प्रयोग किया गया जिनके द्वारा अब एक ही समय में विशाल बाल समूहों का अध्ययन किया जा सकता है।

2- सामान्य प्रकार के अध्ययनों के साथ-साथ विशिष्ट प्रकार के अध्ययनों की जानकारी → वर्तमान बाल अध्ययन विधियों द्वारा एक ही समय मे बालक के विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जा सकता है। जिसके द्वारा व्यक्ति की बौद्धिक, शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

3- परीक्षण आन्दोलनों का विकास - बीसवी शताब्दी में बाल विकास के विभिन्न पहलुओं और व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए आन्दोलन के रूप में विभिन्न परीक्षण विधियों का विकास हुआ है। जिसके द्वारा व्यक्ति की बौद्धिक शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

बाल अध्ययन के उद्देश्य →

बाल विकास निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को लेकर चलता है।

1- बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं की जानकारी प्राप्त करना।

2- प्रत्येक अवस्था के विकासात्मक परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करना।

3- प्रत्येक अवस्था के विकासात्मक परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करना।

4- बालकों के समुचित विकास के लिए उसकी रुचियों तथा आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त करना।

5- सामान्य तथा असामान्य बालकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6- परिवर्तनों के आधार पर बालकों के विकास के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना।

7- विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों - परिपक्वता और शिक्षण तथा वंशानुक्रम और वातावरण में सहसम्बन्ध ज्ञात करना

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

बाल विकास का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व

बाल्यकाल प्राणी के जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है।
यह विकास का काल भावी जीवन की आधारशिला प्रस्तुत करता है।
अतः सभी मनोवैज्ञानिकों शिक्षाशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने इस अवस्था के महत्व को स्वीकारा है।
प्रारम्भ में समाज की यह धारणा थी कि मानव शिशु शारीरिक रूप से प्रौढ़ो के समान ही होता है। जो कि विकास क्रम में धीरे-धीरे प्रौढ़ के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

बाल मनोविज्ञान :-

बाल मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है। बाल + मनोविज्ञान। 'बाल' का अर्थ है बालक अर्थात् वह प्राणी जो प्रौढ़ नहीं हुआ है उसे बालक की श्रेणी में रखा जाता है।
अतः गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक की आयु के बच्चो को बालको की श्रेणी में रखा जाता है।

बाल मनोविज्ञान की परिभाषायें-

बाल मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपनी अलग-अलग परिभाषाये दी है। कुछ प्रमुख परिभाषाये निम्नलिखित है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

1- क्रो और क्रो के अनुसार →

"बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल का प्रारम्भिक अवस्था से किशोरावस्था तक करता है।"

2- जेम्स ड्रेवर के अनुसार →

"बाल मनोविज्ञान की वह शाखा है जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वावस्था तक करती है।"

बाल विकास के क्षेत्र →

बाल विकास का क्षेत्र अत्यन्त ही विस्तृत और व्यापक है। यह बालक के विकास के ~~प्राणी~~ सभी आयामों, स्वरूपों, असामान्यताओं, शारीरिक व मानसिक परिवर्तनों तथा इनको प्रभावित करने वाले तत्वों जैसे परिपक्वता और शिक्षण, वंशानुक्रम और वातावरण आदि सभी का अध्ययन करता है।

1- बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन

प्राणी के जीवन प्रसार में अनेकों अवस्थाये जैसे गर्भकालीन अवस्था शैशवावस्था बचपनावस्था बाल्यावस्था, वयःसंधि और किशोरावस्था

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

बाल विकास केवल बाल्यावस्था का ही अध्ययन नहीं करता अपितु विकास क्रम की सभी अवस्थाओं के शारीरिक मानसिक सामाजिक संवेगात्मक बौद्धिक आदि सभी पहलुओं का अध्ययन करता है।

बाल विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन — बाल विकास, विकास के किसी एक ही क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं होता है। इसके अन्तर्गत विकास के विभिन्न पहलुओं जैसे शारीरिक विकास मानसिक, संवेगात्मक विकास सामाजिक विकास क्रियात्मक विकास नैतिक विकास, चारित्रिक विकास और व्यक्तित्व विकास सभी तथ्यों विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन → ~~मनुष्य~~ बाल विकास केवल मानसिक दुर्बलताओं और रोगों का ही अध्ययन नहीं करता बल्कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक तरीकों से उनके उपचार भी प्रस्तुत करता है। मनोचिकित्सा बाल मनोविज्ञान और बाल विकास की ही देन है।

बाल विकास के अध्ययन का महत्व →

वर्तमान समय में बाल विकास भी अन्य सामाजिक विज्ञानों की

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

यह एक स्वतन्त्र विज्ञान है। इसका अध्ययन सम्पूर्ण मानव की इकाई माना जाता है। इसलिये क्रो एण्ड क्रो ने कहा है। कि "व्यक्ति तथा समाज के कल्याण के क्षेत्र में रुचि रखने वाले मनोवैज्ञानिक, शिक्षण, अभिभावक सामाजिक कार्यकर्ता बालकों के अध्ययन को महत्व देने लगे है।

बाल पोषण विधियों का ज्ञान →

बाल विकास के अध्ययन से माता - पिता तथा अभिभावको को बाल पोषण विधियों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक माता-पिता प्रथम शिशु के जन्म के समय बाल पोषण के ज्ञान से अनभिज्ञ होते है। लेकिन बाल विकास का अध्ययन माता - पिता को मातृत्व तथा पितृत्व के दायित्व जैसे- गम्भीर प्रश्नों का उत्तर हल करके बाल पोषण को सहज बनाता है।

22/8/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया